छत्तीसगढ़ मे राष्ट्रीय आन्दोलन के अग्रदुत–पं.सुन्दरलाल शर्मा

डॉ.तिहारू राम बघेल
पीएच.डी.,नेट,सेट

भूमिकाः–

वनो की सघनता,सदानिरा जीवन दाई नदिया,नैसर्गिक सौन्दर्य अपुल खनिज संपदा से परिपुर्ण,अपनी अनोखी अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति संस्कृति को संजोय हुए छत्तीसगढ़ यूही धान का कटोरा नही कहलाता बल्कि हमारी राष्ट्रीय आन्दोलन मे भी छत्तीसगढ़ के अनेको महापुरूषो का अतुल्निय योगदान रहा है। इन्ही मे से एक है पं. सुन्दरलाल शर्मा। पं. शर्मा छत्तीसगढ मे राष्ट्रीय आन्दोलन के अग्रदुत माने जाते है। निश्चित ही राष्ट्रीय आन्दोलन मे आपकी भुमिका महत्वपूवर्ण रहा है ।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की गिनती आधुनिक समाज के सबसे बड़े आन्दोलनों में की जाती है। विभिन्न विचार धाराओं और वर्गो के करोड़ो लोगो को इस आन्दोलन नें राजनीतिक रूप से सक्रीय होने के लिए प्रेरित किया और शक्तिशाली औपनिवेशिक साम्राराज्य को घुटने टेकने लिए विवश किया। अपने तरह का यह एक मात्र आन्दोलन हैं जिसमें दृष्टिकोणो के टकराव का ग्राम्शी द्वारा प्रतिपादित सौद्धांतिक परिपेक्ष्य सफलता पूर्वक अमल मे लाया गया। (ग्राम्शी द्वारा प्रतिपादित राजनीतिक नेत्रृत्व हेमोजोनी की आवधारणा यह हैं कि औपनिवेशिक समाज में राजनीतिक नेत्रृत्व का उपयोग उपनिवेशवादी शासक और साम्राराज्य विरोधी शक्तियॉ दोनो ही करते हैं लेकिन स्वतंत्र पूजीवांद समाज से इसका सन्दर्भ भिन्ना होता है। आशय है कि राजनीतिक नेत्रृत्व का ऐसा उपयोग जो पूर्ण आधिपत्य के एकदम विपरीत हैं।) जहा राजसत्ता पर क्रान्तिं के जरिये एक खास ऐतिहासिक क्षेत्र मे कब्जा नही किया गया, बल्कि इसके विपरीत नैतिक, राजनैतिक और विचारधारात्मक तीनो ही स्तरो पर लम्बे जन संघर्ष चला कर इसको हासिल किया गया है, जहा अनेक वर्षो मे धीरे–धीरे जवाबी राजनीतिक नेत्रृत्व की शक्ति संचित की गई तथा संघर्ष और शान्ति के दौर बारि–बारि आते आते रहे।

स्वतंत्रता आन्दोलन की, वे मूल्य और आधुनिक आदर्श जिनको आधार बना कर यह आन्दोलन खड़ा किया गया था और इसके नेताओ कि सामाजिक,आर्थिक और राजनीतिक परिकल्पना इस आन्दोलन के महत्वपूर्ण पक्ष हैं। यह परिकल्पना लोकतान्त्रिक, नागरिक स्वतंत्रता वाले धर्मनिरपेक्ष भारत की थी, जिसका आधार आत्मनिर्भरता, समतावादि समाज–ब्यवस्था और स्वतंत्र विदेशनीति की थी। **1**

हमारी राष्ट्रीय आन्दोलन अपनी मूकाम को हासिल कर सका, इसमे छत्तीसगढ़ अंचल की भूमिका ऐतिहासिक रही हैं। देश की हर छोटी एवं बड़ी घटनाओ के साथ छत्तीसगढ़ का संबंध होता राहा है। पं. सुन्दरलाल शर्मा छत्तीसगढ के महान विभूतियो में से हैं जिसकी राष्ट्रीय आंन्दोलन मे अहम भूमिका रही हैं। **2**

छत्तीसगढ मे राष्ट्रीय चेतना का विकास–

1857 की महान विपल्व से भारत में राष्ट्रीय चेतना का संचार हुऑ था। जिसकी चिंगारी मेरठ की सैनिक छावनी से होते हुए मुख्यतः उत्तर भारत में फैल गयी इससे छत्तीसगढ भी अछूता न रह सका। ब्रिटिश साम्राराज्यवाद के विरूध 1857 मे जब क्रान्तिं प्रारम्भ हुई तब तत्कालीन रायपुर जिला के सोनाखान के जमींदार नारायण सिंह ने विद्रोह का परचम लहराया था जिसके वीरता के कारण उस वीरनारायाण सिंह के रूप मे प्रसिद्धि मिली। उस समय वे रायपुर के जेल में सजा काट रहे थे। **3** जहा से अपने कुल साथियो के साथ फरार होकर सेनाखान पहुचने मे सफल हुए एवं विद्रोह कर दिया। **4** विद्रोह को दबाने के लिए अंग्रेज अधिकारी स्मिथ के नेत्रृत्व में अंगेजो की एक सेना की टुकड़ी सोनाखान पहुची। स्मिथ ने सोनाखान में नारायण सिंह को नही पा कर बस्ती में आग लगा दी और विद्रोहियो को सोनाखान मे घेर लिया। अंन्ततः वीरनारायण सिंह को पकड़ कर वर्तमान रायपुर के जयस्तंम्भ चौक में 10 दिसंम्बर 1857 को फासी दे दि गयी। **5** इसी घटना के साथ छत्तीसगढ अंचल में राष्ट्रीय चेतना का विकास दिन दो गुनि रात चौगुनि होनी प्रारंभ हुई।

* शिक्षक(पंचायत), गुखेरा,आरंग,जिला–रायपुर(छ.ग.)

छत्तीसगढ मे अनगिनत महापुरूष अवतरित हुए है, इस अंचल को सुसंस्कृत बनाने में मुख्यतः तीन महापुरूषो का सर्वाधिक योगदान रहा। प्रथम गुरूघासीदास जी ने अध्यात्मिक एवं समाजिक चेतना 'सतनाम पंथ' के माध्यम से अठाहरवी शताब्दी मे जागृत की। जो कि 19 वी–20 वी में प्रवर्तित भारतीय सामाजिक–धार्मिक सुधार आंन्दोलन की पूर्वगामी थी। यह इस अंचल के लिए गर्व की बात है। सत्य,अहिंसा,प्रेम,करूणा जो छत्तीसगढ के जनजन मे समाहित हैं, वह इनही की देन है। दुसरा, महान व्यक्तित्व उपरोक्त उल्लेखित वीरनारायण सिंह जी हैं। तीसरा युग पं. सुन्दरलाल शर्मा का आता हैं, जिन्होने सुषुप्त छत्तीसगढ मे राष्ट्रीय चेतना जगायी, जिसके लिए उन्होने जागरण के सभी विधाओ का प्रयोग करते हुए अपना सब कुछ अर्पण कर दिया । **6**

राष्ट्रीय आंन्दोलन और पं. सुन्दरलाल शर्माः–

छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय जागरण के अग्रदुत पं. सुन्दरलाल शर्मा माने जाते हैं। इन्होने इस अंचल में सामाजिक व राष्ट्रीय आन्दोलन का सूत्रपात किया था। वे राजिम के निकट चमसुर गाँव के रहने वाले थे, इसके बावजूद उन्होने सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व किया था। सन् 1906 में उन्होने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की । जबकी भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की शाखा रायपुर मे 1903 मे स्थापित हुई। **7**

पं. सुन्दरलाल शर्मा के प्रखर व्यक्तित्व ने सम्पूर्ण अंचल के सुधारको, विचारको एवं देश भक्तो को एकता के सुत्र में आबद्ध किया।

रायपुर मे काग्रेस की शाखा स्थापित करने में बैरिस्टर सी.एम.ठक्कर का विशेष योगदान रहा। 1906 में पं. शर्मा ने 'संम्मित्र मंण्डल' की स्थापना की जिसमे सैकड़ो लोगो ने सदस्यता ग्रहण की। इस मंण्डल का उद्देश्य समाज सुधार के साथ ही आम जनता में राष्ट्रीय भावना जागृत करना था। पं. सुन्दरलाल शर्मा 1907 में सूरत के अधिवेसन् में संम्मिलित हुए। **8** इसके बाद जीवनभर काग्रेस के सम्मेलनो में प्रतिनिधित्व किया। उन्होने मृत्यू पर्यन्त स्वदेशी आंन्दोलनो को गति देने में अहम भूमिका अदा की। उन्होने स्वदेशी आन्दोलन के प्रचार–प्रसार के लिए राजिम,धमतरी,महासमुन्द और रायपुर मे खादी आश्रम की स्थापना की। **9** इस कार्य में महान राष्ट्रा प्रेमी नारायणराव मेघावाले ने आपका साथ दिया। स्वदेशी वस्तुओ की प्रचार–प्रसार और खादी आश्रम के संचालन में पं. शर्मा को बहुत अधिक आर्थिक नुकसान हुआ, जिसके कारण उन्हे अपना गाँव मुजगहन बेचना पड़ा था। आपकी देश भक्ति इससे स्पष्ट होती है। आप एक समर्पित देश भक्त थे। 1907 से 1940 तक मृत्यू पर्यन्त आप काग्रेश क प्रचार–प्रसार एवं राष्ट्रीय जागृति के लिए जुड़े रहे। **10**

1907 में अखिल भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस का प्रान्तीय अधिवेशन रायपुर मे हुआ, जिसकी अध्यक्षता केलकर जी ने की थी। बैरिस्टर हरिसिंह गौर इसके स्वागत समिती के अध्यक्ष थे। रायपुर मे आयोजित 1907 के इस अधिवेशन में सूरत काग्रेस अधिवेशन की फूट स्पष्ट परिलक्षित हुई। दादा साहेब खापर्डे ने वंदेमातरम् राष्ट्रीय गीत से कार्यवाही की शुरूआत करने का सुझाव प्रस्तुत किया, किन्तु डॉ. हरिसिंह और डॉ. मुन्जे इसके लिए तैयार नही थे। परिणामतः वातावरण शीघ्र ही उग्र हो उठा। अन्ततः खापर्डे और उसके साथियो ने सम्मेलन का बहिष्कार कर दिया तथा कार्यक्रम के शुभारंभ से पूर्व ही वे पण्डाल से उठकर चले गये। अन्ततः पं.रविशंकर शुक्ल नरमदल वाले साथियो से दादा साहेब खापर्डे के प्रस्ताव स्वीकार कर वंदेमात्रम् से कार्य प्रारम्भ करने का अनुरोध किया खापर्डे साहब को स्वीकृति की सूचना दी गई किन्तु पुनः वे सम्मेलन आने के लिए तैयार नही हुए। **11** इसी प्रकार राष्ट्रीय घटना क्रम की स्पष्ट छाप इस अंचल मे भी घटित हुआ।

पं.सुन्दरलाल शर्मा की शिक्षा केवल प्राथमिक तक हुई थी, किन्तु उन्होने स्वाध्याय से संस्कृत,बंगला,मराठी और उड़िया..... आदि भाषाओ का अध्ययन कर लिया था। राष्ट्रीय एवं बौद्धिक विकास के साथ–साथ उनकी अभिरूचि साहित्य व कला के क्षेत्र मे भी था। आपका सम्पर्क अनेक विद्वानो से था, जिसके कारण आप बहुमुखी प्रतिभा है अर्जित करने मे सफल हुए। पं. शर्मा नाटयकला,मूर्तिकला व चित्रकला में पारंगत थें। वे अनेक ग्रन्थों के रचियता भी है जिनमे 'प्रहलाद चरित्र', करूणा पचिसी व

सतनामी भजनमाला अधिक उल्लेखनीय हैं । पं. शर्मा तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के विरोधी थे, जो जातिगत भेदभाव के सिद्धांन्त पर आधारित थी। उन्हे विशेषकर सामाजिक स्तर पर सतनामियो की स्थिति अच्छी नही लगी। अतः पं. शर्मा सतनामियो की कल्याण के लिए संघर्ष करने लगे तथा जनेऊ धारण करवाया। **12** इस मानवीय सेवा के कारण उन्हे सामाजिक प्रताड़ना भी सहन करनी पड़ी। उसकी परवाह कीये बिना वे अछूतोद्धार के कार्य में संल्गन रहे। यह एक उल्लेखनिय तथ्य है कि उन्होने अछूतो की सेवा का यह कार्य गांधी जी के पूर्व ही प्रारम्भ कर दिया था। गाधी जी ने उनके इस कार्य की बड़ी प्रशंसा की थी कि वे अछूतोधाररको राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से अनिवार्य मानते थे। पं. शर्मा अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से इस अंचल के विचारको एवं समाज सुधारको एक सुत्र मे बाधने मे सफल हुए। उन्होने सन् 1906 ई.

में 'सम्मित्र मण्डल' की स्थापना की जिसकी सदस्यता अनेक लोगो ने ग्रहण की। इसका उद्देश्य सामाजिक सुधारो के साथ–साथ लोगो मे राष्ट्रीय जागृति का विकास करना था। **13**

1918 में राजिम के राजीवलोचन मंदिर में शंद्धिकरण आन्दोलन चलाकर सतनामि तथाकथित अस्पृष्य माने जाने वालो को बाराबरी का स्थान दिलाया, वह भी अपने सवर्णो की विरोध की परवाह किये बिना निश्चित ही महानकार्य था। इसी कार्य के लिए गाधी जी ने पं. शर्मा को अपना गुरू स्वीकार किया था। वही सन् 1924 में रायपुर के अमीन पारा में सतनामी आश्रम की स्थापना की एवं उनके घर जाकर भोजन ग्रहण कर समाजिक समरस्ता एवं एकता का संचार किया। वही 1933 में धमतरी जो कि अब जिला है, में अनाथालय की स्थापना किया। **14**

सभी वर्गो में सुधार आन्दोलन प्रारम्भ किये। सतनामी समाज,कुर्मीसमाज,तेलीसमाज,ब्राह्मण माहासभा को जोड़ कर आप ने सामाजिक कुरीतियो को मिटाने का प्रयास किया । महिलाओ में ब्लाउज पहनने की प्रथा की शुरूआत की, गोरक्षा आन्दोलन चलाया। 15 इस प्रकर पं. सुन्दरलाल शर्मा राष्ट्रीय चेतना जागृत करने मे सफल हुऐ।

असहयोग आन्दोलन के समय 1920 में कॉग्रेस के नागपुर अधिवेशन में पं. रविशंकर शुक्ल, ईराधवेन्द्र राव, वामनराव लाखे के साथ पं.सुन्दरलाल शर्मा ने भी भाग लिया था। उस अधिवेशन के निर्णय अनुसार विदेशी वस्त्रो, स्कूलो,न्यायलयो,सरकारी नौकरियों का त्याग मधनिषेध हेतु आन्दोलन एवं खादी और राष्ट्रीय स्कूलो एवं पंचायतों को बढ़ावा दिया गया, जिसमें पं. शर्मा की अहम भूमिका था। 16

कंडेलनहर सत्याग्रह (1920)–20दिसम्बर 1920 में महात्मागॉधी के रायपुर एवं 21 दिसम्बर 1920 को धमतरी क्षेत्र आगमन से छत्तीसगढ़ में ब्रिटिस शासन के गॉधीवादी विरोध के तरीके का सर्वप्रथम प्रयोग हुआ। शासन द्वारा लगाये गये नहर कर के विरोध में यह सत्याग्रह पं.सुन्दरलाल शर्मा की अगुवाई मे हुआ जिसमें छोटेलाल श्रीवास्तव,नारायण राव मेघावाले ने भी प्रमुख भेमिका निभाई थी। यह सत्याग्रह सफल हुआ था। उसी सत्याग्रह के समय महात्मागॉधी का प्रथम छत्तीसगढ़ अगमन पं. शर्मा के अनुरोध पर हुआ।गॉधीजी 20 दिसंम्बर 1920 को प्रथम बार छत्तीसगढ़ आये थे।गाधीजी के साथ मोहम्मद शौकत अली भी आए थे। कण्डेल भारत के दूसरे बाददोली के नाम से जाने जाते है ।

प्रथम मजदूर आन्दोलन राजनांदगॉव के बी.एन.सी. मिल में ठाकुर प्यारे लाल सिंह के नेतृत्व मे 21 फरवरी 1920 में असहयोग आन्दोलन के दौरान 37 दिनो की लंबी हडताड हुई। इतने समय तक चलने वाली देश की यह पहली हडताल थी।

सिहावा नगरी का सत्यग्रह–1922में वन अधिकारियों के बेगार,शोषण के विरोध एवं स्थानीय लोगो के वन संपदा के प्रयोग को लेकर धमतरी जिले के नगरी क्षेत्र में सत्यग्रह प्रारंभ हुआ था। इस आन्दोलन का नेतृत्व पं. सुन्दरलाल शर्मा, नारायण राव मेघावाले एवं बाबू छोटेलाल

श्रीवास्तव आदि नेताओ ने किया तथा इस सत्यग्रह के दौरान पं. सुन्दरलाल शर्मा, नारायणराव मेघावाले सहित कई सत्याग्रहियो को दंडित किया गया ।17

सविनय अवज्ञा आन्दोलन 12 मार्च 1930 से गॉधी द्वारा प्रसिद्ध दाण्डी यात्रा से पुरे देश भर में प्रारंभ हुआ था। इसी क्रम में छत्तीसगढ़ में भी यह आन्दोलन प्रारंभ हुई जिसमें पं. सुन्दरलाल शर्मा माहाकौशल राजनीतिक परिषद के अध्यक्ष चुने गये। उस आन्दोलन के दौरान छत्तीसगढ़ में विविध कार्यक्रम सम्पन्न हुए । उसी दौरान नवम्बर 22–28,1933 में गॉधी जी का द्वितीय बार छत्तीसगढ़ आगमन हुआ। धमतरी,भाठापारा,दुर्ग,बिलासपुर की यात्रा,सतनामी आश्रम और अनाथालय का अवलोकन किया, साथ ही पं. शर्मा को तथाकथित अस्पृष्यता निवारण कार्यक्रम चलाने के कारण अपना गुरू कहा गॉधी जी के साथ मीराबेन,ठक्कर बापा, महादेव देसाई भी आये थे। गॉधी जी ने सर्वप्रथम अपने पत्रिका नवजीवन का नाम बदलकर हरिजन सेवक रखा। 18

इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में पं. सुन्दरलाल शर्मा का योगदान रहा हैं।

निष्कर्षः–

19वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटिश साम्राराज्यवाद भारत में सम्पूर्ण राजनीतिक आधिपत्य स्थापित कर चुका था। इस समय भारत की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक दशा अत्यन्त शोचनीय थी। मानवता और राष्ट्रीय एकता की बात पर भी वर्ण व्यवस्था के कारण हिन्दू समाज विभाजित था। जाति प्रथा,अस्पृस्यता,सतीप्रथा,बालविवाह,पर्दाप्रथा,मूर्तीपूजा,अवतरवाद,
बहुदेववाद,धार्मिक अंधविश्वास,धर्मपरिवर्तन.....आदि अनेको कुप्रथाओ से भारतीय समाज ग्रसित था। इस समय इन बुराईयो से जुझने के लिए भारतीय समाज को ऐसे निःस्वार्थ समाज सेवी और पथ–प्रदर्शक की आवश्यकता थी, जो न केवल संवेदनशील हो वरण जनता के विचारो का आदर करते हुए प्रखर व्यक्तित्व एवं कृतित्व से उन्हे प्रभावित कर नयी चेतना का संचार कर सके। पं. सुन्दरलाल शर्मा ऐसे ही महानविभूति थे, जिन्होने अपनी क्रांतिदर्श द्वारा समाजसेवा, धार्मिक उन्नति, राजनीति चेतना,साहित्य एवं लोककला, चित्रकला,नाटयकला....आदि बहुमुखि विधाओ से राष्ट्र सृजन करने मे सफल हुए। न केवल छत्तीसगढ़ मे राष्ट्रीय चेतना के विकास में आप अग्रदुत थे, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र सृजन में आपकी अहम् भूमिका है।

संदर्भ सूची

1. चंद,बिपिन,"भारत का स्वतंत्रता संघर्ष", हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली वि.वि, पुनर्मुद्रण,1998,पृष्टः(भूमिका)
2. शुक्ल,प्रयागदत्त,"क्रान्ति के चरण" ,1960 पृष्ट 84
3. पार्लियामेंट्री पेपर्स रिकार्डिग म्यूटिनी–फरदर पेपर्स ,पृष्ट 287
4. रायपुर नगरनिगम रिपोर्ट,1971,पृष्ट 1
5. मध्यप्रदेश संदेश,19 अगस्त 1972,पृष्ट 50
6. भूषण,केयूर,"छत्तीसगढ़ मे जनचेतना के संवाहक–पं. सुन्दरलाल शर्मा" ,पृष्ट 119
7 शुक्ल, प्रयागदत्त,"क्रान्ति के चरण" ,1960 पृष्ट 84
8. हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेन्ट इन एम.पी, पृष्ट 291
9. शुक्ल अभिनंन्दन ग्रन्थ–जीवनीखण्ड, 1955, पृष्ट 85
10. शुक्ल, प्रयागदत्त,"क्रान्ति के चरण" ,1960 पृष्ट 85
11. छत्तीसगढ डिविजन रिकार्ड,खण्ड 11, पृष्ट 5,91–92
12. शुक्ल, प्रयागदत्त,"क्रान्ति के चरण" ,1960 पृष्ट 85
13. महिलांने, नयनदास,"साक्षात्कार", राजमहन्त एंव स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, दिनांक 18 दिसंम्बर 2010
14. शुक्ल, डॉ. प्रदीप, "छत्तीसगढ में राष्ट्रीय आन्दोलन" ,जे.पी. इलाहाबाद पब्लि.प्रथम 2006, पृष्ट 46
15. ठाकुर,हरि,"पं. सुन्दरलाल शर्मा की जीवनी"(पाण्डुलिपी)
16. चौबे,डॉ.रहिम,''राष्ट्रीय चेतना के विकास में छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों का योगदानः पं. सुन्दरलाल शर्मा के विशेष संदर्भ में", शोधप्रबध, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर,पृष्ठ– 71
17. "छत्तीसगढ़ का इतिहास",छत्तीसगढ़ हिन्दी ग्रंथ अकादमी रायपुर,वर्ष–2003 पृष्ठःजीवनी खण्ड
18. गुप्त,प्यारेलाल,"प्राचीन छत्तीसगढ़", पं.रविशंकर शुक्ल वि.वि.1971 पृष्ठः 271